डी० बी० कॉलेज जयनगर, मधुबनी

एल० एन० एम० यु० दरभंगा,

नाम - मो० मुन्ना

सहायक प्राचार्य (अतिथि शिक्षक)

मैथिली विभाग

B.A. - Part - II SUBSIDIARY

दिनांक - 06,05,2020

अलंकार

अलंकार :- 'अलंकरोति इति अलंकार' अर्थात जाहि उपकरण सँ काव्यक सौन्दर्य पूर्ण होइछ ओकरा अलंकार कहल जाइछ।

आचार्य दण्डी अलंकारकेँ एहि रूप मे परिभाषित करैत लिखैत छथि:- 'काव्यशोभाकरान धर्मालंकरान प्रचक्षते', अर्थात काव्यक शोभाकर धर्म अलंकार कहबैछ। अलंकार दुई शब्दक योग सँ बनल अछि - अलम् + कार। अलम शब्दक अर्थ होइछ आभूषण आ कार शब्दक अर्थ होइछ करनिहार अर्थात जे सौन्दर्यकेँ पूर्ण करय, प्रभावपूर्ण बना दियय, अलंकृत करय अथवा जाहि सँ अलंकृत कयल जाय।

अलंकारक तीन भेद अछि —

1. शब्दालंकार (ii) अर्थालंकार (iii) उभयालंकार

शब्दालंकार :- जाहिठाम शब्दाश्रित अलंकार होइछ ओकरा शब्दालंकार कहल जाइछ।

शब्दालंकार छः प्रकारक होइत अछि -

(i) अनुप्रास (ii) वक्रोक्ति (iii) श्लेष (iv) यमक
(v) पुनरुक्ति वा वीप्सा (vi) पुनरुक्तवदाभास

1. यमक :- सार्थक रहितहुँ भिन्न अर्थ रखनिहार स्वर व्यंजन समूहक क्रमशः आवृत्तिकेँ यमक अलंकार

Scanned with CamScanner

कहल जाइछ।
जेना :- ~~सारंश यमक~~
बह मन्द सुरभि शीतल समीर।
बह सरीता कुहु दिश विमल नीर।
यमक अर्थ होइछ 'दु' । अतः एहि अलंकारमे एकर अकार वर्ण समूहक यमसँ-कम पुर्ई बीर मबना होइक आवश्यक आछि।

8. **श्लेष** :- जाहि शब्दमे अनेक अर्थ सटल रहल श्लेश अलंकार कहल जाइछ।
ई दु प्रकारक होइत आछि -
i. संभंग श्लेष (ii) अभङ्ग श्लेष

i. संभंग श्लेष :- जाहि दु शब्दकेँ तोड़ला सँ एक सँ बेसी अर्थ बाहर होइत आछि ओतय संभंग श्लेष कहल जाइछ।
ii) अभंग श्लेष :- जाहि शब्दकेँ बिनु तोड़ने अनेक अर्थ नीकलैत होइत आछि। ओकरा अभङ्ग श्लेष कहल जाइत आछि।
जेना :- i. मोर मेल द्विजकर स्वर पसारल। एतय द्विज शब्दक ब्राह्मण आ कोइली दुनु होइत आछि आ दुनुकेँ स्वर पसारब संदर्भ मे उपर प्रासांगिक होइत आछि।
जनिके जनक कश्यप स्वयं लोकवेद मे ख्यात।
से यदि सेवथि वारुणी तँ की अद्भुत बात?
एहि ठाम कश्यपक अर्थ काश्यप महर्षि एवं पद, ताड़ी बेचनिहार एवं वारुणीक अर्थ पश्चिम दिशा आ मेघ होइत आछि।

अनुप्रास :- आचार्य मम्मटक अनुसार -"वर्णा साम्यनुप्रास।" अर्थात समान वर्णक बेर-बेर आवृति अनुप्रास अलंकार कहबैत आछि। जेना - लोल कपोल ललित मणि कुंडल,
अधर बिम्ब अधा जाई।

Scanned with CamScanner